International Journal of Social Science & Management Studies (I.J.S.S.M.S.)
Peer Reviewed–Refereed Research Journal, Indexing & Impact Factor - 5.2, Ex - UGC S.N. 5351
ISSN : 2454 - 4655, Vol. - 9, No. – 10, November – 2023, Special Issue Hindi
2023

विदेशी अनुदित साहित्य के संदर्भ में 'दस्तावेज' पत्रिका का योगदान

डॉ. मलकीयत सिंह
सह-प्रोफ़ेसर, हिंदी विभाग, केंद्रीय विश्वविद्यालय, हिमाचल प्रदेश

साहित्य समाज की अभिव्यक्ति है प्रत्येक युग का साहित्य उस युग की चित्वृतियों का दर्पण होता है । मानव सभ्यता के विकास में साहित्य का ही सर्वाधिक योगदान है। साहित्य सृजन की विशेषता प्रत्येक संस्कृति, प्रत्येक सभ्यता एव प्रत्येक समाज में पाई जाती है। विश्व की प्रत्येक बोली,एवं भाषा में मौखिक या लिखित रूप में रचा जा रहा साहित्य इस बात का प्रमाण है। साहित्य काल ,देश आदि की सीमाओं से परे होता है भौगोलिक सीमाओं, भेषभूषा आदि से इतर साहित्य सभी को एक सूत्र में बांधता है । वृहत्तर भारतीय साहित्य की बात की जाये तो विभिन्न बोलियों ,भाषाओँ आदि में साहित्यिक रचनाएं हुई हैं इनमें महान ग्रंथ रचे गये हैं एवं साहित्य की कई विधाएं प्रकाश में आई हैं। आलोचना एवं काव्यशास्त्र में भी भारतीय भाषाओं का साहित्य बेजोड़ है ऐसे में यह उत्सुक्ता पैदा होती है कि विदेशों में किस प्रकार की रचनाएँ लिखी जा रही हैं ? उनका मजमून क्या है ? इस प्रश्न के उत्तर की सामग्री हमें पत्र पत्रिकाओं में प्रकाशित लेखों में मिलती है जिनमें साहित्यिक पत्रिका 'दस्तावेज़' का महत्वपूर्ण स्थान है ।

साहित्यिक पत्रिका दस्तावेज में प्रकाशित विभिन्न विदेशी भाषाओं की रचनाओं ने पाठकों को विश्वसाहित्य से जोड़ने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है। 'दस्तावेज़' का यह अंतर्राष्ट्रीय साहित्य का मंच पाठकों को विभिन्न देशों रूस, जापान, बल्गारिया साहित्य युगोस्लाविया, फिलिस्तीन, मारीशास आदि के साहित्य से रू-ब-रू करवाने में पूर्णतः सफल हुआ है । 'दस्तावेज' में 'देशांतर' शीर्षक से प्रकाशित इस साहित्य का संक्षिप्त विश्लेषण इस प्रकार है -

कविता विधा -

'दस्तावेज़' अप्रैल 1979 में पाब्लो नेरुदा की कविताएँ - 'वह जन्मा', 'बसन्त' शीर्षक से प्रकाशित हुई है, जिनका अनुवाद प्रेमशंकर ने किया है, इसी अंक में 'तानाशाह, आज की रात में लिख सकता हूँ' शीर्षक से विश्वनाथप्रसाद तिवारी ने अनुवाद प्रस्तुत किया है 'दस्तावेज़' जनवरी 1981 में विद्यानिवास मिश्र द्वारा अनुवादित तीन आधुनिक| कोरियाई कविताएँ 'इन दिनों', 'पतझर', 'बादली चांदनी रात में गाँव' शीर्षक से प्रकाशित हुई है।

'दस्तावेज़' अक्तूबर 1982 में छः रूसी कविताएँ प्रकाशित हुई हैं जिनका अनुवाद गंगाप्रसाद विमल ने किया है, तथा इसी अंक में तीन अमीरीकी नीग्रो कविताएँ प्रकाशित हुई हैं जिनका अनुवाद, जीवन मलावरी ने किया है । इनमें जोज़ेफ जीमन फीटर जूनियर (मूल लेखक) की कविता 'तब तुम क्या कहोगे !' (अनु०) का उदाहरण द्रष्टव्य है -

"भाईजान, आओ । हम ईश्वर के पास चलें और जब हम उसके आगे खड़े होंगे
मैं कहुँगा । प्रभू, मैं नहीं करता किसी से नफरत
पर मुझसे की जाती है।
मैं किसी पर नहीं मारता चाबुक
पर मुझ पर मारा जाता है
मैं नहीं चाहता किसी और की जमीन
पर मेरी छिन जाती है
मैं नहीं करता किसी की निंदा
पर मेरे विरादरों की होती है और भाईजान मेरे, तब तुम क्या कहोगे ।"1

एक ही ईश्वर की संतानें कहलाने वाली पश्चिमी संस्कृति में फैले रंगभेद को उजागर करती उपर्युक्त पंक्तियाँ मार्मिक हैं ।

इसी अंक में पांच फिलीस्तीनी कविताएँ प्रकाशित हुई हैं जिनका अनुवाद अनिल जन विजय ने किया है, साथ ही सात बल्गारी कविताएँ प्रकाशित हुई हैं जिनका अनुवाद विनोद शर्मा ने किया है । इनमें से अतानास दॉलचे (मूल लेखक) की कविता द्रष्टव्य है -
सफेद / चमचमाते, फरिश्ते की मानिंद क्या एक बार भी नहीं उतरेगी

आसमान के नीचे
.... और मगर किसी दिन आ भी जाती है बर्फ तो उसे रौंद देंगे
क्रूर सिपाही और वेश्याएँ
जूतों के नीचे
और स्टेशनों और चिमनियों का धूंआं
काले कर देगा उसके सफेद पंख
सफेद बर्फ
सिर्फ उन बागों में होगी जहाँ खेलते रहे हैं बच्चे । 2
मानवता रूपी सफेद वर्फ अब विस्तारवादी क्रूर जूतों और अंधे लालच के धूंए की कालिख से दूषित और दमित कर दी गई है।

अंक 18 में ताकिजेन्ची मसाकों की पांच जापानी कविताएँ प्रकाशित हुई हैं जिनका अनुवाद केवल गोस्वामी ने किया है। फेंटेसी से युक्त ये कविताएँ मुक्तिबोध की कविता के समान एक अलग संसार चित्रित करती हुई प्रतीत होती हैं । 'मात्र एक' शीर्षक से प्रकाशित अनुदित कविता यहाँ द्रष्टव्य है।

एक पीला गलीज़ चेहरा
उभरता है आधी रात की नीरवता में
कई पोटलियां लिये
अग्रसर होता हूँ मैं प्रभात की ओर,
भविष्य के लिए सैंकड़ों शून्य जगमगाती है लहरें
निश्चित स्थल के लिए किसी ने संयोये हैं
स्वस्थ फेफड़े/ सबको दिखाता हूँ दुःखों को छिपाकर -
खुशियों भरा एक जादुई चिराग / और पौधे निरंतर

एक सम्पूर्ण खोपड़ी
प्रतीक्षारत मैं
बीज फेंकते हैं । '3

अंक 25 में बल्गारी कविताएँ प्रकाशित हुई हैं जिनका अनुवाद गंगाप्रसाद विमल ने किया हैं, जिनमें निकोल फर्नाजीव की कविता 'बसंत की हवा' में प्रकृति चित्रण है वहीं, रदोई रॉलिन की कविता 'स्थानापन्न' युद्ध की विभीषिका और स्वप्नों को चित्रित करती है । इनमें वालेरी पेत्रोव (मूल लेखक) की कविता 'तारों के नीचे' देशकाल की सीमाओं को तोड़कर सबकी अभिव्यक्ति बन गई है। पंक्तियाँ द्रष्टव्य हैं -

तुम ऐसा कहते हो,
पर मैं नहीं जानता कि मुझे इस पर यकीन है ।
तो आकाश गंगा सिर्फ तारों के गुच्छ हैं ?
जब वहां आटा गूंथने ही वाला था कि हवा आई और
उसके कर्मफल का सारा आटा उड़ा ले गई । 4

अंक 26 में रूसी कविताएँ प्रकाशित हुई हैं । जिनका अनुवाद वरयाम सिंह, और अनिल जनविजय ने किया है । अनातोली परम्परा (मूल लेखक) की कविता की पंक्तियाँ यहाँ उद्धृत की जा रही हैं

मैंने देखा
बचपन को जवानी में बदलते हुए
मैंने देखा
जवानी को अधेड़ावस्था में ढलते हुए
मैंने देखा
जीवन के इन सभी क्षणों को मैंने भरपूर जिया है
कितना धीरे-धीरे जगता है विवेक
अधेड़ावास्था को बुढ़ापे में गुजरते हुए कितनी तेजी से बढ़ता है शरीर कितनी तेजी से ।
कितनी तेजी से ढलता है
और मर जाता है'5

'बिटिया' शीर्षक से प्रस्तुत इनकी कविता भी सुन्दर बन पड़ी है । अंक 27 में विनोद शर्मा द्वारा अनुदित बल्गारी कविताएँ प्रकाशित हुई हैं। निकोल वप्तसारोव (मूल लेखक) की कविता 'दस्तावेज़' महत्त्वपूर्ण हैं जो मजदूरों की आंतरिक पीड़ा को व्यक्त करती हैं । इतिहासकारों को मजदूरों की ओर से कवि कहते हैं -

क्या तुम हमारा जिक्र करोगे अपनी बदरंग जीर्ण
सूची में दफ्तरों फैक्टरियों में हमने काम किया
काम किया खेतों में हमने हमारे शरीर... ।
मगर नहीं थे मशहूर हमारे नाम
छोड़ते रहे प्याज और खट्टी रोटी की तेज गंध
हमारे शरीर '6

मज़दूर वर्ग की सच्चाई सम्पूर्ण संसार की है । मजदूर हर कहीं पिसता है और शोषित होता है फिर भी बदले में उसे बस इतना ही चाहिए -

मुसीबत और संताप के बदले
हम नहीं मांगते इनाम
और न ही हम चाहते देखना अपनी तस्वीरें
वर्ष कलैण्डरों में बस जरा सुना देना उन्हें हमारी कहानी
नहीं देख पाएंगें हम जिन्हें
उन्हें बताना जो हमारी जगह लेंगे
अटूट हिम्मत से लड़े
हम युद्ध में ।'7

अंक 28 में पाब्लो नेरुदा की दो कविताएँ प्रकाशित हुई है। जिनका अनुवाद राजा खुगशाल ने किया है, 'बहुत सारे नाम' शीर्षक से अनुदित कविता यहाँ इष्टव्य है-

कोई भी दावा नहीं कर सकता
पेड़ों के नाम का
न कोई 'रोजा' है और न 'मारिया' हैं हम सब धूल हैं या रेत
बारिश के बाद की बारिश है
हम सब...
कहने का अर्थ यह कि
अपूर्ण उतरते हैं हम जीवन में
जलजात की तरह उगते हुए
इसलिए मुंह नहीं भर लेना चाहिए हमें
इन छदम नामों से । '8

अंक 31-32 में रोबर्ट रेजदेवस्त देन्सकी (मूल लेखक) की रूसी कविताएँ प्रकाशित हुई हैं जिनका अनुवाद केवल गोस्वामी ने किया है। '1943 में' शीर्षक से छपी एक कविता महत्त्वपूर्ण है । द्वितीय विश्वयुद्ध की विभीषिका में युद्ध, संघर्ष, और रिश्तों को प्रस्तुत करती यह कविता द्रष्टव्य है -

सेना का एक डाक्टर / ले जा रहा है एक लड़के को / मोर्चे पर
मेरी माँ / अम्मी ! / मुझे मत थपथपाओ
मत भरो सुबकियों में पहने हूँ/सिपाही की वर्दी में पहने हूँ
तुम्हारे लम्बे जूते /मत भरो सुबकियां
मैं कब का बारह पार कर चुका हूँ
लगभग व्यस्क हो गया हूँ
पटरियां फैल रही हैं/और फैल रही हैं/और फैल रही है
कागज़ है मेरी जेब में
छोटी सी
सेना की मोहर-1 मेरी जेब में कागज
जो बताते हैं कि/मैं पलाटून का बेटा हूँ ।'9

अंक 37 में प्रसिद्ध रचनाकार वाल्ट हिटमैन की सात कविताएँ प्रकाशित हुई हैं। जिनका अनुवाद राजा खुशहाल ने किया है, बाल्ट हिटमैन (सन् 1818-1892) उन्नीसवीं सदी के महान कवि है। सामाजिक और मानवीय सरोकारों से युक्त हिल्टमैन की कविताओं का फलक बहुत व्यापक है । विश्व मानव की चिंता और मनुष्य की गरिमा की पुनर्प्रतिष्ठापना का स्वर उनकी कविताओं का मुख्य स्वर है। महाकवि डब्लयू0एच0ओडन की तरह, धर्म, दर्शन और विज्ञान के प्रति उनका प्रगतिशील दृष्टिकोण उनकी कविताओं में भी लक्षित होता है । 'हिन्दुस्तान के लिए एक पैरा' और 'आम सड़क का गीत' हिटमैन की लम्बी कविताएँ हैं और 'आत्मगीत' और 'घास की पत्तियां' मुख्य कविता संग्रह।' 'आध्यात्मिकता का आधार, शीर्षक से कविता में कवि कहते है-

मनुष्य को मनुष्य के प्रति लगाव
दोस्त का दोस्त के प्रति विवाहित पति पत्नी का प्रेम
बच्चों के प्रति मां बाप का
एक इलाके का दूसरे इलाके के प्रति और एक शहर का दूरे शहर के प्रति प्रेम जरूरी है । '10
इसी अंक में इनकी 'जानवर' शीर्षक से प्रकाशित कविता सुन्दर बन पड़ी है ।

पंक्तियाँ द्रष्टव्य हैं -
सोचता हूँ
मुड़ सकता हूँ मैं
और रह सकता हूँ. जानवरों के बीच
वे अधिक चुपचाप और आत्मलीन हैं।
देखता हूँ
उन्हें
दूर तक सहृदय नहीं है वे अनजान हैं।
अपनी स्थितियों के प्रति
झूठ नहीं बोलते जानवर
सोच रहे हैं अंधेरे में और सोये रहते हैं। ईश्वर के प्रति
अपने कर्त्तव्य पर

व्यर्थ की बहस नहीं करते
संतुष्ट हैं जानवर और नहीं हैं पागल
उनमें नहीं है चीजों को हासिल करने का अंधा उन्माद । '11

अंक 38 में विश्वनाथ प्रसाद तिवारी द्वारा अनुदित तो हूँ हो ची मिन्ह की कविताएँ प्रकाशित हुई हैं । 'अक्रांत दक्षिण' शीर्षक से प्रकाशित कविता सुन्दर बन पड़ी है । इन्हीं की एक अन्य कविता 'बेड़ियों के विरुद्ध' की पंक्तियाँ द्रष्टव्य हैं -

धान कूटा जाता है मूसल से,
फिर भी प्रशंसनीय है उसकी सफेदी अग्नि परीक्षा के बाद
यही हालत है मनुष्य की हमारे युग में-
आदमी होने के लिए, तुम्हें सहना होगा बदनसीबी का मूसल,12

अंक 41 'विश्व कविता' पर केंद्रित है । इसमें कई देशों के कवियों की अनुदित रचनाएँ प्रकाशित हुई हैं । सम्पादक कहते हैं 'दस्तावेज़' का यह अंक विश्व कविता पर केन्द्रित है । इस अंक में प्रकाशित कविताओं से समकालीन विश्व कविता की एक मुक्कमल तस्वीर तो नहीं पर उसकी एक झलक हमारे पाठकों को मिल सकती है । ... भारत एक प्राचीन देश है और जहाँ कवि और कविता को शीर्ष स्थान प्राप्त है । कवि को 'प्रजापति', 'मनीषी', 'परिभूः स्वयंभू' आदि कहा गया है । काव्यपाठ को भी यहाँ अत्यंत प्राचीन काल से बहुत महत्त्व दिया गया है ।;13

राजशेखर (दसवीं शती) ने 'काव्य मीमांसा' के सातवें अध्याय में इस विषय पर विस्तृत गम्भीर विवेचन किया है। उन्होंने काव्य की विशेषताओं को और उसके दोषों को बताते हुए उस समय भारत के विभिन्न प्रांतों में प्रचलित पाठों का जो सूक्ष्म विवेचन किया है उससे उनका 'यायावरीय' नाम भी सार्थक होता है ।... वस्तुतः कविता का कोई देश नहीं होता न किसी कवि के सामने देश जाति या धर्म की कोई संकीर्ण सीमा होती है । कवि और कविता का पक्ष सत्य, न्याय, प्रेम, शांति और मूल्यों का पक्ष होता है। यहाँ अनेक देशों और भाषाओं की कविताएँ प्रस्तुत करते हुए गुरुदेव रविंदरनाथ टैगोर की पंक्तियाँ याद आ रही हैं -

सब ठाईं मोर घर आछे अमि सेई घर मरि खूजिया
देशे देशे मोरे देश आछे अमि सेई देश लेनो जूझिया ।

(सब जगह मेरा घर है, मैं उसी घर को खोज रहा हूँ । सभी देशों में मेरा देश है, मैं उसी देश को पाने के लिए जूझ रहा हूँ ।'14

'विश्वकविता' पर केंद्रित यह अंक वास्तव में सम्पादक की मानवतावादी विचारधारा का ही प्रतीक है । अंक 55 में महेंद्रनाथ दुबे ने वीरेंद्र कुमार बरनवाल द्वारा अनुदित वोले शोंचिका की कविताओं पर लेख प्रकाशित किया है। लेखक कहते हैं, कविता के अनुवाद में जिस गहरे जोखिम का वरण एक सुधी और संवेदनशील अनुवादक खुद-ब-खुद करता है उसे रेखांकित करते हुए वीरेंद्र कुमार बरनवाल ने पानी के छींटे सूरज के चेहरे पर शीर्षक से (नाईजीरिया कविताओं के अनुदित संकलन) में कहा है कि यह कर्म 'तलवार की धार पर धावनों है' जैसा है। बोले शोंचिका की कविताएँ इस जोखिम से उनकी गहरी रचनात्मक वैचेनी के साथ टकराने का एक दूसरा ज्वलंत उदाहरण है ।'15

अंक 61 में एक बल्गारी कविता, एक युगोस्लावी कविता व फिलिस्तीनी कविताएँ प्रकाशित हुई हैं जिनका अनुवाद विनोद शर्मा ने किया है । अंक 69 में आईसलैंड की आधुनिक कविताएँ प्रकाशित हुई है जिनका अनुवाद कुंदन माली ने किया है। अंक 77 में पोलिश कवयित्री विस्लाव, शिवोस्की की तीन कविताएँ प्रकाशित हुई हैं। जिनका अनुवाद विजय आहलुवालिया ने किया है। 'अंत और आरम्भ' शीर्षक से प्रकाशित हुई कविता महत्त्वपूर्ण है । युद्धों के विनाश और पुनर्निर्माण पर कवयित्री कहती है -

हर युद्ध के बाद
किसी न किसी को सब कुछ ठीक करना पड़ता है ।
आखिर चीजें अपने आप तो ठिकाने नहीं लग जाएंगी
किसी को सड़कों से मलवा हटाना पड़ता है ।
ताकि लाशों से भरी गाड़ियाँ गुजर सकें ।
कोई भारी कदमों से चलता चला जाता है
कीचड़ और राख से होते हुए सोफों के स्प्रिंग
कांच के टुकड़ों और खून सने कपड़ों से बचते हुए'16

अंक 93 में प्रकाशित रूसी कवि एवोनी येन्तुशेंको की अनुवादित कविताएँ महत्त्वपूर्ण हैं।

जिनका अनुवाद अनिल जनविजय ने किया है । इसी प्रकार सूरीनाम से कविता 'वसुधैव कटुम्बकम के प्राण' शीर्षक से प्रकाशित हुई है जिसका अनुवाद पुष्पिता ने किया है । अनिल जनविजय भूमिका में लिखते हैं -

'विश्वप्रसिद्ध रूसी कवि येन्तुशेंकों, मूलतः लम्बी कविताएँ लिखते हैं । वे समकालीन घटनाओं पर तात्कालिक प्रतिक्रिया देते हैं । स्तालिन की मृत्यु के तुरन्त बाद इन्होंने 'स्तालिन के वारिस' लिखी थी जिसके कारण वे छठे दशक के आरम्भ में दुनिया भर में चर्चित हो गये । सोबियत संघ टूटने के बाद उन्होंने 'लाल झण्डे का विदा गीत' कविता लिखी ।'17 इन्हीं द्वारा रचित रूसी क्रांति के कुप्रभावों और आम जनता के शोषण का चित्रण करते हुए कवि कहता है :

बच्ची वह / रोई भी ऐसे
चेहरा उसका ऐंठ गया था
चेहरे पर पीड़ा थी गहरी /
लाल झंडा वहां जैसे पैठ गया था
क्या होगा क्रांति से भला ?
इस भयानक मार-काट के बाद
फिर से असहनीय रुदन फैला है
और रूस है आजाद ।'18

'दस्तावेज़' में देशांतर' शीर्षक से प्रकाशित स्तम्भ में विभिन्न विदेशी भाषाओं के साहित्य पर आलोचनात्मक लेख ही प्रकाशित हुए हैं । साहित्य की विभिन्न विधाओं पर आधारित ये लेख विभिन्न वादों तथा रचनाशीलता की पक्रिया को उजागर करते हैं । कुछ महत्वपूर्ण लेखों का संक्षिप्त ब्योरा यहाँ प्रस्तुत है

'दस्तावेज़' अक्तूबर 1980 में पाश्चात्य आलोचक ज्यापाल सार्त्र पर तीन महत्वपूर्ण लेख प्रकाशित हुए हैं। इसमें राधाकृष्ण मणि त्रिपाठी का लेख 'ज्यापाल सार्त्र पश्चिमी संस्कृति का अरेस्टस', सभाजीत मिश्र का लेख 'सात्र मार्क्सवाद के अतिक्रमण को ओर, प्रताप सिंह का लेख 'सात्र का अनस्तित्व सिद्धान्त' शीर्षक से प्रकाशित हुए हैं । इनमें इस महान रचनाकार के चिंतन पर प्रकाश डाला गया है । अंक 11 में 'समकालीन रूसी कथा साहित्य' शीर्षक से बरयाम सिंह का लेख प्रकाशित हुआ है जिसमें रूसी साहित्य के विकास पर चर्चा करते हुए कुछ उपन्यासों की विवेचना प्रस्तुत की गयी है।

अंक 33 में प्रसिद्ध कवि कीट्स के महत्त्वपूर्ण प्रेम-पत्र प्रकाशित हुए हैं जिसमें कवि ने अपनी प्रेमिका फैनी ब्राउन को लिखे आठ पत्रों का हिन्दी रूपांतरण जमनालाल बायवी ने प्रस्तुत किया है । अंक 58 में यहूदी कवि क्लांद लेवी-सत्रांस का मिथक विश्लेषण, दिनेशवर प्रसाद मिश्र ने प्रस्तुत किया है । लेखक कहते हैं, क्लाद लेवी-संत्रॉस बीसवीं सदी के उन प्रमुख चिंतकों में हैं, जिनकी विचारधारा का पूरी दुनिया के बुद्धिजीवियों और दार्शनिकों पर गहरा प्रभाव पड़ा है संरचनात्मक मानव विज्ञान के नाम से परिचित उनकी यह विचारधारा उनके बौद्धिक विकास की एक लम्बी प्रक्रिया की उपज है । यदि इस प्रक्रिया के प्रवर्तन से लेकर समापन तक की स्थितियों पर विचार किया जाए तो स्वयं क्लाद लेवी सत्रॉस के अनुसार, उनका सम्बन्ध भ्रूगंभ-विज्ञान, मनोविश्लेषण भाषा विज्ञान, और मार्क्सवाद से उनके साक्षात्कार से है । वह इनके सूत्रों के मौलिक संयोजन द्वारा अपने संरचनावाद का विकास करता है । किन्तु उसके संरचनावाद का कोई भी सावधान अध्येता यह अनुभव कर सकता है कि इनका केन्द्र बिन्दु मार्क्सवादी द्वन्द्ववाद है नातेदारी, गोत्र, प्रतीक और मिचक जैसे इसके विशिष्ट अध्ययन क्षेत्रों का समस्त प्रयोगपक्ष साम्प्रदायवाद, प्रतिवाद, गुणात्मक परिवर्तन और निषेध के लिए निषेध जैसे सूत्रों पर आधारित है '19

अंक 92 में प्रकाशित नोवेल पुरस्कार विजेता भारतीय मूल के लेखक विद्याधर सूरज प्रसाद नयपाल (सर नयपॉल) के चिंतन का वैचारिक आधार' शीर्षक से हरिकृष्ण निगम का लेख महत्त्वपूर्ण है। लेखक कहते हैं, नयपाल ने इस तथ्य को कभी नहीं छिपाया कि उसके उदारवादी और मुक्त दृष्टिकोण में मुस्लिमों को गित मान्यताओं के लिए कोई स्थान नहीं है। अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रसिद्ध लेखक नीरज चौधरी के साथ के दूसरे सर्वाधिक प्रतिष्ठित लेखक थे जो 1992 में गिराई गई बाबरी मस्जिद के घटनाक्रम को हिन्दुओं के स्वाभाविक प्रतिकार और इतिहास के अनिवार्य प्रतिशोध के रूप में देखते थे। ...उनकी बेबाक टिप्पणियों ने दुनिया भर में अनेक लोगों को विचलित किया है ।

पर उनकी सत्य के लिए प्रतिबद्धता और

अकाट्य तर्कों के सामने लोगों को नतमस्तक होना पड़ा है। साहित्य के इस (नोवेल) पुरस्कार की घोषणा के लगभग एक घण्टे बाद ही इंगलैंड के मुस्लिम समुदाय ने नयपाल को मुस्लिम विरोधी घोषित कर उनकी भर्त्सना की। बी०बी०सी० में 'न्यूज नाईट' कार्यक्रम में ब्रिटेन की मुस्लिम काउंसिल के प्रवक्ता ने इस पुरस्कार को नयपाल को दिए जाने को राजनीति साजिश और मुस्लिम समुदाय को अपमानित करने का विद्वेषपूर्ण कदम कहा है 'मुस्लिम-यूपत्र के सम्पादक अहमद वारसी ने नयपाल को 'हिन्दुराष्ट्रवादी कहकर उसकी भर्त्सना की। वैसे उनकी टिप्पणियों ने दूसरे साहित्यिक विवादों को भी जन्म दिया है। उन्होंने अंग्रेजी साहित्य के विश्व प्रसिद्ध लेखकों को भी नहीं छोड़ा और ई०एम० फोर्स्टर, जेम्स, और चातर्स डिकेंस पर भी आक्रामक टिप्पणी की। वे भारतीय वामपंथी साहित्यकारों को हेय दृष्टि से देखते थे और उनकी विकृत ऐतिहासिक दृष्टि को राजनीति से प्रेरित मानते थे। प्रसिद्ध भारतीय पत्रकार फारूख ढोंढी को उन्होंने एक साक्षात्कार में कहा था कि रोमिला थापर जैसी विकृत और संकीर्ण दृष्टि वाली कथित प्रगतिशील लेखिका एक 'फ्राड' हो।

'दस्तावेज़' में प्रकाशित विदेशी साहित्य के संक्षिप्त विवेचन से हम यह कह सकते हैं कि देश काल की सीमाओं का अतिक्रमण करते हुए यह साहित्य कमोवेश रूप में हर मानव का साहित्य है। इसके प्रकाशन की पीछे सम्पादक का दृष्टिकोण भी बड़ा स्पष्ट है, मानवतावादी विचारधारा का प्रसार करना और सहृदय को इस विचारधारा का पोषण देना। साहित्य देशकाल की सीमाओं से परे होता है, जो मनुष्य ने अपने स्वार्थ के लिए खींच रखी है। उसका उद्देश्य भी एक होता है, मानवता की सेवा और परोपकार। यह ऐसा भाव है जो पोषित न होने पर अभिव्यक्ति का रास्ता ढूंढता है। प्रत्येक भाषा में हो रही साहित्य रचना इस बात का प्रमाण है। चाहे वे भारत के किसी प्रांत में हो या विश्व के किसी कोने में साहित्य अभिप्राय लगभग एक जैसा होता है। अतः इसी साहित्य के इसी प्रभाव को पहचान कर विश्वनाथप्रसाद तिवारी द्वारा उसकी एक झलक प्रस्तुत करना प्रशंसनीय है। इससे हिन्दी भाषा के विकास में भी मदद मिलती है तथा अन्य भाषाओं को मंच प्राप्त होता है। हमारे लिए यह प्रसन्नता का विषय है कि 'दस्तावेज़' यह प्रक्रिया वर्तमान में भी निर्वाध गति से अग्रसर है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची :-

1 दस्तावेज़, अक्तूबर 1982, पृ0 77
2 वही, पृ0 81 |
3 दस्तावेज, जनवरी 1983, पृ0 81 1
4. दस्तावेज़, अक्तूबर 1984, पृ0 24
5. दस्तावेज, जनवरी 1985, पृ0 82 1
6. दस्तावेज़, अप्रैल 1984, पृ0 8
7 दस्तावेज अप्रैल 1985, पृ0 9
8. दस्तावेज़, जुलाई 1985, पृ0 88 1
9 दस्तावेज अप्रैल-जुलाई 1986, पृ0 108
10 दस्तावेज अक्तूबर 1987, पृ0 83
11 दस्तावेज़, अक्तूबर 1987, पृ0 84
12. दस्तावेज, जनवरी 1984, पृ0 87
13 दस्तावेज़, अक्तूबर 1988 (सम्पादकीय)।
14 दस्तावेज़, अक्तूबर 1988, (सम्पादकीय)
15 दस्तावेज़, अप्रैल-जून 1992, पृ0 68 1
16 दस्तावेज, अक्तूबर-दिसम्बर 1977, पृ0 1
17 दस्तावेज़, अक्तूबर-दिसम्बर 2001, पृ0 84
18दस्तावेज़, अक्तूबर-दिसम्बर 2001, पृ0 85
19 दस्तावेज़, जनवरी-मार्च 1993, पृ0 1-13।
दस्तावेज, जुलाई-सितम्बर 2001, पृ0 3 1